



## न्यूज़ वीफ

**सुपर न्यू मून सूर्य ग्रहण का कारण बनेगा! दिखेगा अद्भुत नजारा, कई खगोशास्त्रिय घटनाएं ऐसी हैं, जो एक-दूसरे से जुड़ती हैं**



वाशिंगटन। सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण दुनियाभर में खगोशास्त्रियों के लिए दिलचस्प होता है। इसमें कई घटनाएं ऐसी हैं, जो एक-दूसरे से जुड़ती हैं। सुपर न्यू मून और सूर्य ग्रहण का जिक्र अक्सर एक साथ होता है। इससे यह मान लेना आसान है कि एक घटना अपने आप दूसरी घटना का कारण बनती है। दोनों ही घटनाओं में न्यू मून का चरण शामिल होता है। हर सूर्य ग्रहण की शुरुआत न्यू मून से होती है लेकिन हर न्यू मून सूर्य ग्रहण में नहीं बदलता है। अब ऐसे में सवाल खड़ा हो रहा है कि क्या 2026 का सुपर न्यू मून सूर्य ग्रहण का कारण बनेगा। इस साल सुपर न्यू मून की घटना दुनिया को देखने को मिलेगी तो क्या फिर इसके चलते सूर्य ग्रहण भी होगा। सुपर न्यू मून तब होता है जब न्यू मून की घटना चंद्रमा के अपनी कक्षा में पृथ्वी के सबसे करीब होने के समय होती है। खगोलीय विशेषज्ञों के मुताबिक यह समुद्र में ज्वार-भाटा को प्रभावित कर सकता है। जहां तक सवाल है कि सुपर न्यू मून के सूर्य ग्रहण का कारण बनने का सवाल है तो इसका सीधा जवाब नहीं है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सुपर न्यू मून सिर्फ यह बताता है कि चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर अपनी कक्षा में कहा है। सूर्य ग्रहण पूरी तरह से एक अलग वजह पर निर्भर करता है। यह वजह है सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी का एक ही सीध में आना यानी एलाइनमेंट। सुपर न्यू मून अमूमन बिना ग्रहण के गुजर जाते हैं क्योंकि चंद्रमा आमोरी पर पृथ्वी की कक्षा के तल से थोड़ा ऊपर या नीचे चलता है। जब सीध बिल्कुल सही नहीं होती है तो चंद्रमा की छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ती है और कोई सूर्य ग्रहण नहीं होता है।

## पीएम मोदी की यात्रा से और बेहतर होंगे स्लोवाकिया से संबंध, भारतीयों की समस्याओं के भी निकलेंगे समाधान



ब्रातिस्लावा। पीएम नरेंद्र मोदी सोमवार को स्लोवाकिया की राजधानी ब्रातिस्लावा पहुंचे, जहां भारतीय समुदाय के लोगों और स्थानीय कलाकारों ने उनका स्वागत किया। पीएम मोदी की इस यात्रा से भारत और स्लोवाकिया के संबंध और गहरे होंगे, जिससे वहां रहने वाले भारतीयों की समस्याओं के समाधान के लिए सकारात्मक कदम उठाने में मदद भी मिल सकेगी। गौरतलब है कि पीएम मोदी को स्लोवाकिया की पारंपरिक रोटी और नमक भेंट कर उनका अभिनंदन किया गया। पीएम मोदी की यात्रा पर स्लोवाक संगीत एवं आध्यात्मिक समूह महादेवा कीर्तन प्रोजेक्ट के संस्थापक और ड्रमर मारक जिलिनेक ने कहा कि हमारे बैड को महादेवा कीर्तन प्रोजेक्ट कहा जाता है। मैं गायक नहीं, बल्कि ड्रमर हूँ। यह हमारे लिए बड़े सम्मान की बात है। हम स्लोवाकिया स्थित भारतीय दूतावास के आभारी हैं, जिसने हमें पीएम मोदी के स्वागत में प्रस्तुति देने का अवसर दिया।

## बांग्लादेश में ऐतिहासिक स्थानों के नाम बदलने की उठी मांग, हिंदुओं की बढ़ी चिंता

ढाका। बांग्लादेश में ऐतिहासिक महत्व वाले स्थानों के नाम बदलने की मांग को लेकर विवाद बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर गाइबांधा जिले में एक हिंदू धार्मिक परिसर के निर्माण कार्य को रोक दिया गया है। इन घटनाओं ने अल्पसंख्यक अधिकारों से जुड़े लोगों के बीच चिंता बढ़ा दी है। बता दें इस हिंदू धार्मिक परिसर की सबसे प्रमुख विशेषता बांग्लादेश की सबसे ऊंची भगवान कुष्मा की प्रतिमा है। करीब 50 फीट ऊंची इस काली प्रतिमा का उद्घाटन 25 नवंबर 2025 को राजशाही में भारत के सहायक उच्चायुक्त मनोज कुमार ने किया था। उद्घाटन के बाद से यह स्थल बांग्लादेश के कई हिस्सों से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। मंदिर समिति की दीर्घकालिक योजना में कई हिंदू देवी-देवताओं की कुल 144 प्रतिमाओं का निर्माण, धार्मिक संरचनाएं और सुंदर कलात्मक स्थापत्य विकसित करना शामिल है। इसके साथ ही सबसे ताजा विवाद बोगरा जिले के शिबगंज उपजिला से जुड़ा है। शिबगंज का नाम लंबे समय से भगवान शिव से जुड़ा माना जाता है। रिपोर्टों के मुताबिक अधिकारियों ने उपजिला का नाम बदलकर महास्थान उपजिला करने की प्रक्रिया शुरू की है। इस प्रस्तावित बदलाव ने अल्पसंख्यक अधिकार कार्यकर्ताओं और सांस्कृतिक पर्यवेक्षकों की चिंता बढ़ा दी है। उनका मानना है कि यह केवल एक नाम बदलने का मामला नहीं है, बल्कि देश की ऐतिहासिक और धार्मिक पहचान से जुड़े प्रतीकों को धीरे-धीरे हटाने की शुरुआत है।

# दुनिया की पहली कमर्शियल ब्रेन चिप नियो लांच करने के साथ ही चीन ने मस्क को पछाड़ा

**बीजिंग**  
ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस (बीसीआई) तकनीक को कारोबारी बनाने की वैश्विक दौड़ में चीन ने अमेरिकी कारोबारी एलन मस्क की न्यूरोलॉजिक को एक बड़ा झटका देकर दुनिया की पहली व्यावसायिक रूप से उपलब्ध ब्रेन चिप नियो को लांच किया है। सफल क्लिनिकल परीक्षणों के बाद चिप को वाणिज्यिक उपयोग के लिए मंजूरी मिल गई है, जिससे यह तकनीक इसानी दिमाग और मशीनों के बीच सीधा संबंध स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।  
बीजिंग की सिंचुआ यूनिवर्सिटी और शंघाई की न्यूरोकल टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित, सिक्कों के आकार का यह नियो इम्प्लांट, नैदानिक परीक्षण पास करने वाला

पहला सर्जिकल इम्प्लांट बीसीआई डिवाइस बना है। इसका प्रारंभिक संस्करण उन मरीजों की मदद के लिए बनाया गया है जो रीढ़ की हड्डी की चोट और लकवा से जूझ रहे हैं, ताकि वे अपने तंत्रिका तंत्र के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण पा सकें। वर्तमान में, 11 लोग डिवाइस का परीक्षण कर रहे हैं, जबकि कुल 36 मरीजों पर इसके सफल परिणाम दर्ज किए हैं।  
यह विकास तब हुआ है जब मस्क की न्यूरोलॉजिक अमेरिका में मानव परीक्षण कर रही है, लेकिन अभी तक व्यावसायिक उपयोग के लिए नियामक मंजूरी नहीं मिली है। मस्क ने अपनी ब्रेन-चिप को जीसस-लेवल टेक्नोलॉजी बताकर इसकी जीवन बदलने वाली क्षमता पर जोर दिया है, जिससे भविष्य में उपयोगकर्ता अपने विचारों से टाइप कर सकते

और विभिन्न उपकरणों को नियंत्रित कर पाएंगे। न्यूरोलॉजिक एन1 इम्प्लांट नौ मरीजों पर परीक्षण किया जा रहा है, जिसमें एक प्रतिभागी आइडू क्रूज़ ने अपने अनुभव को आशाजनक बताया है।  
विश्लेषकों का मानना है कि नियो इम्प्लांट का डिजाइन चीन की तेजी से प्रगति का एक प्रमुख कारण है। न्यूरोलॉजिक के एन1 डिवाइस में इलेक्ट्रोड को सीधे दिमाग के सेरेब्रल कॉर्टेक्स में डाला जाता है, जबकि निओ को खोपड़ी और दिमाग के बीच (ड्यूरा मेटेर के पास) फिट होने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें आठ सेंसर शामिल हैं। यह कम-इनवेसिव (कम दखलंदाजी वाली) प्रक्रिया ब्रेन इम्प्लांट से जुड़े पारंपरिक चिकित्सा जोखिमों को कम करने में मदद करती है।

विशेषज्ञों का कहना है कि बीसीआई तकनीक न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से जूझ रहे लाखों लोगों, विशेषकर चलने-फिरने और बोलने में कठिनाई वाले लोगों के जीवन को बेहतर बना सकती है। इसका उपयोग लकवा और रीढ़ की हड्डी की चोटों से परे पार्किंसंस रोग, मिर्गी, स्ट्रोक और डिप्रेशन जैसी स्थितियों के उपचार में भी हो सकता है। हालांकि, चीन में बढ़ती इस तकनीक ने प्राइवैसी, सिक्योरिटी और सेप्टी को लेकर चिंताएं भी पैदा की हैं। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि सैद्धांतिक रूप से, ये डिवाइस हैकर्स को मरीजों के संवेदनशील न्यूरोल डेटा या विचारों तक पहुंच प्रदान कर सकते हैं, जो भविष्य में नई चुनौतियां खड़ी करेगा।

# अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने सुलझाया 50 साल पुराना रहस्य

**वाशिंगटन**  
अंतरिक्ष वैज्ञानिकों द्वारा लगभग पांच दशकों से जिस घटना की केवल परिकल्पना की जा रही थी, अब उसके अस्तित्व की पुष्टि हो गई है। वैज्ञानिकों ने पहली बार हमारी आकाशगंगा मिल्की वे के केंद्र में स्थित सुपरमैसिव ब्लैक होल से निकलने वाली शक्तिशाली हवाओं के प्रत्यक्ष प्रमाण खोजे हैं। वैज्ञानिकों की यह खोज अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है और इससे ब्लैक होल के व्यवहार तथा आकाशगंगाओं के विकास को समझने में नई दिशा मिलेगी। मिल्की वे के केंद्र में स्थित इस विशाल ब्लैक होल को सैजिटेरियस ए-स्टार के नाम से जाना जाता है। वैज्ञानिक लंबे समय से मानते रहे हैं कि ब्लैक होल केवल पदार्थ को निगलते ही नहीं, बल्कि अपने आसपास की गैस और धूल पर प्रभाव डालते हुए ऊर्जा और हवाओं का भी उत्सर्जन करते हैं। हालांकि अब तक सैजिटेरियस ए-स्टार से निकलने वाली ऐसी हवाओं का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला था।



विशेषज्ञों के अनुसार, जब गैस और धूल ब्लैक होल की ओर खिंचती है, तो अत्यधिक गति और गुरुत्वाकर्षण के कारण उसमें भारी ऊर्जा उत्पन्न होती है। यही ऊर्जा आसपास के पदार्थ को बाहर की ओर धकेल सकती है, जिसे वैज्ञानिक ब्लैक होल विंड्स कहते हैं। दिलचस्प बात यह है कि सैजिटेरियस ए-स्टार अपेक्षाकृत बहुत कम मात्रा में पदार्थ निगलता है, फिर भी उसमें यह प्रक्रिया सक्रिय पाई गई है। इस रहस्य को सुलझाने के लिए वैज्ञानिकों ने चिली में स्थित अट्याकामा लार्ज मिलीमीटर/सबमिलीमीटर एरे (अल्मा) वेधशाला के पांच वर्षों के अवलोकन डेटा का अध्ययन किया। यह वेधशाला 66 अत्याधुनिक रेडियो एंटेना से लैस है और अंतरिक्ष में मौजूद ठंडी गैसों का अत्यंत सूक्ष्म अवलोकन करने में सक्षम है।

अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं को सैजिटेरियस ए-स्टार के आसपास मौजूद ठंडी आणविक गैस में लगभग तीन प्रकाश-वर्ष लंबी एक शंकुकार खाली जगह दिखाई दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह क्षेत्र ब्लैक होल से निकलने वाली गर्म हवाओं के कारण बना है, जिन्होंने आसपास की गैस को या तो दूर धकेल दिया या अत्यधिक गर्म कर दिया। शुरुआत में वैज्ञानिकों को संदेह था कि यह प्रभाव आसपास मौजूद तारों की हवाओं के कारण भी हो सकता है। लेकिन विस्तृत गणनाओं से स्पष्ट हुआ कि तारों के पास इतनी ऊर्जा नहीं है कि वे इतनी बड़ी संरचना बना सकें। इसके बाद शोधकर्ताओं ने नासा के चंद्रा एक्स-रे वेधशाला के आंकड़ों का सहारा लिया। जब अल्मा और चंद्रा के डेटा

## जी7 शिखर सम्मेलन 2026: फ्रांस के इवियान में उच्चस्तरीय बैठक शुरू, ट्रंप की मौजूदगी से बड़ा वैश्विक फोकस

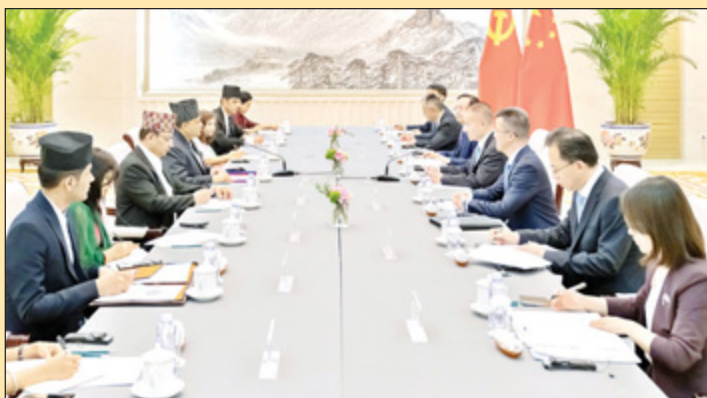
**इवियान (फ्रांस)।** फ्रांस के इवियान-लेव-बैस में 2026 का जी7 शिखर सम्मेलन शुरू हो गया है, जिसमें दुनिया की सात प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के नेता वैश्विक आर्थिक और सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा के लिए एकत्र हुए हैं। इस बार सम्मेलन का केंद्र बिंदु अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भागीदारी और उनकी कूटनीतिक गतिविधियां बनी हुई हैं। फ्रांस के राष्ट्रपति एमनुएल मैक्रों मेजबान के रूप में शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे हैं। सम्मेलन 15 से 17 जून तक चलेगा और इसमें वैश्विक व्यापार तनाव, ऊर्जा सुरक्षा, एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), और यूक्रेन तथा मध्य पूर्व जैसे संघर्ष पर विशेष चर्चा होने की संभावना है। सूत्रों के अनुसार, ट्रंप हाल ही में अमेरिका-ईरान संघर्ष पर हुए एक समझौते की घोषणा के बाद इवियान पहुंचे हैं, जिसके तहत होर्मुज जलडमरूमध्य खोलने और युद्ध विराम की दिशा में कदम उठाए जाने की बात कही गई है। सम्मेलन में यूरोपीय देशों—ब्रिटेन, जर्मनी, इटली और कनाडा के साथ-साथ जापान के नेता भी शामिल हैं। इसके अलावा यूरोपीय संघ के प्रतिनिधि भी बैठक में भाग ले रहे हैं। जानकारों का मानना है कि इस बार जी7 बैठक विशेष रूप से संवेदनशील मानी जा रही है क्योंकि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर युद्ध, ऊर्जा संकट और चीन की व्यापार नीतियों का दबाव बढ़ा हुआ है। फ्रांस ने इस बार एजेंडे को इस तरह तैयार किया है कि सदस्य देशों के बीच टकराव कम हो और सामूहिक सहमति बनाई जा सके। सम्मेलन के दौरान ट्रंप की उपस्थिति और उनके द्विपक्षीय बैठकों पर भी सभी की नजर है, खासकर यूरोपीय नेताओं के साथ उनके संबंधों को लेकर।

को एक साथ मिलाया गया, तो पाया गया कि जहां गैस में खाली स्थान मौजूद था, वहीं से एक्स-रे उत्सर्जन भी हो रहा था। इससे ब्लैक होल विंड्स की मौजूदगी की पुष्टि हो गई। शोधकर्ताओं का मानना है कि यह हवा संभवतः लगभग 20 हजार वर्षों से बह रही है। हालांकि पृथ्वी के लिए इससे कोई खतरा नहीं है, क्योंकि सैजिटेरियस ए-स्टार हमसे करीब 26 हजार प्रकाश-वर्ष दूर स्थित है। इतनी विशाल दूरी के कारण इसका हमारी पृथ्वी या सौर मंडल पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता। यह खोज

अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं को सैजिटेरियस ए-स्टार के आसपास मौजूद ठंडी आणविक गैस में लगभग तीन प्रकाश-वर्ष लंबी एक शंकुकार खाली जगह दिखाई दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह क्षेत्र ब्लैक होल से निकलने वाली गर्म हवाओं के कारण बना है, जिन्होंने आसपास की गैस को या तो दूर धकेल दिया या अत्यधिक गर्म कर दिया। शुरुआत में वैज्ञानिकों को संदेह था कि यह प्रभाव आसपास मौजूद तारों की हवाओं के कारण भी हो सकता है। लेकिन विस्तृत गणनाओं से स्पष्ट हुआ कि तारों के पास इतनी ऊर्जा नहीं है कि वे इतनी बड़ी संरचना बना सकें। इसके बाद शोधकर्ताओं ने नासा के चंद्रा एक्स-रे वेधशाला के आंकड़ों का सहारा लिया। जब अल्मा और चंद्रा के डेटा

अध्ययन के दौरान शोधकर्ताओं को सैजिटेरियस ए-स्टार के आसपास मौजूद ठंडी आणविक गैस में लगभग तीन प्रकाश-वर्ष लंबी एक शंकुकार खाली जगह दिखाई दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह क्षेत्र ब्लैक होल से निकलने वाली गर्म हवाओं के कारण बना है, जिन्होंने आसपास की गैस को या तो दूर धकेल दिया या अत्यधिक गर्म कर दिया। शुरुआत में वैज्ञानिकों को संदेह था कि यह प्रभाव आसपास मौजूद तारों की हवाओं के कारण भी हो सकता है। लेकिन विस्तृत गणनाओं से स्पष्ट हुआ कि तारों के पास इतनी ऊर्जा नहीं है कि वे इतनी बड़ी संरचना बना सकें। इसके बाद शोधकर्ताओं ने नासा के चंद्रा एक्स-रे वेधशाला के आंकड़ों का सहारा लिया। जब अल्मा और चंद्रा के डेटा

## नेपाल में चीन के सहयोग से चल रही परियोजनाओं में तेजी आने की उम्मीद



काठमांडू। नेपाल में चीन के सहयोग से चल रही परियोजनाओं में तेजी आने की उम्मीद है। रविवार को चार दिवसीय दौरे पर चीन पहुंचे नेपाल के विदेशमंत्री शिशिर खनाल ने सोमवार को अपने चीनी समकक्ष वांग यी के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। नेपाल के विदेश मंत्रालय के बयान के अनुसार, इस दौरान चीन ने पूर्व में सहमत परियोजनाओं में तेजी लाने का आश्वासन दिया। दोनों देशों के प्रतिनिधिमंडलों के बीच आधारभूत संरचना विकास, संपर्क एवं कनेक्टिविटी, सीमा प्रबंधन, ऊर्जा, व्यापार, निवेश, कृषि, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, सूचना प्रौद्योगिकी एवं डिजिटलीकरण, पर्यटन, रासायनिक उर्वरक, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस अन्वेषण और जनस्तर के संबंधों को और मजबूत बनाने जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। चीन ने नेपाल सरकार को सुशासन और आर्थिक विकास की प्राथमिकताओं में पूर्ण सहयोग देने की प्रतिबद्धता भी दोहराई। नेपाल ने स्पष्ट किया कि वह अपनी भूमि का उपयोग चीन विशेषी गतिविधि के लिए नहीं होने देगा। इसके जवाब में चीन ने नेपाल की संप्रभुता, भौगोलिक अखंडता और स्वतंत्रता के प्रति अपने दृढ़ समर्थन और सम्मान को पुनः व्यक्त किया। साथ ही, सुशासन और आर्थिक विकास के एजेंडे में हरसंभव सहयोग का आश्वासन भी दिया। द्विपक्षीय वार्ता के बाद विदेशमंत्री वांग यी ने खनाल के सम्मान में रात्रिभोज का आयोजन किया।

# अमेरिका के कैलिफोर्निया में एयर फोर्स का बी-52 बाम्बर क्रैश, आठ लोगों की मौत

**वाशिंगटन**  
अमेरिका के कैलिफोर्निया में सोमवार को एयर फोर्स का बी-52 बाम्बर उड़ान भरने के फौन बाद क्रैश हो गया। इस हवाई दुर्घटना में आठ लोगों की मौत हो गई। क्रैश की वजह की जांच चल रही है। बी-52 बाम्बर एडवर्ड्स एयर फोर्स बेस से रूटीन टेस्ट मिशन पर निकला था। इस दुर्घटना की जानकारी स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग 11:20 बजे मिली।  
एयर फोर्स का बी-52 स्ट्रेटोफोर्ट्रेस बाम्बर उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद क्रैश हो गया और उसमें आग लग गई। इससे आठ लोगों की मौत हो गई। बेस पर मौजूद 412वें टेस्ट विंग के डिप्टी कमांडर कर्नल जेम्स हेस ने फ्लूटेंज की समीक्षा के आधार पर कहा कि इस क्रैश में किसी के भी बचने की कोई उम्मीद नहीं है। उन्होंने इसे एक भयानक त्रासदी बताया।  
डिप्टी कमांडर कर्नल जेम्स हेस ने कहा कि हमने आठ बेहतररीन अमेरिकियों को खो दिया। क्रू में वर्दीधारी सैनिक, सरकारी कर्मचारी और सरकारी कान्ट्रैक्टर शामिल थे। विमान में सवार लोगों के नाम उनके परिवार वालों को सूचना देने के 24 घंटे बाद जारी किए जाएंगे।  
बोइंग ने सोमवार शाम एक बयान जारी कर कहा कि हादसे में मारे गए लोगों में से दो इस बड़ी एयरोस्पेस कंपनी के कर्मचारी थे। हम उनके



परिवारों के संपर्क में हैं और उन्हें हर संभव मदद दे रहे हैं। बेस ने कहा कि आपातकालीन स्थिति से निपटने वाली टीम मौके पर मौजूद है। अधिकारी सभी कर्मियों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। हेस के अनुसार, दुर्घटना के कारणों की जांच चल रही है और इस प्रक्रिया में कई महीने लग सकते हैं। बेस पर दिन में कई बार टेस्ट मिशन होते हैं। बेस ने एयरफोल्ड बंद कर दिया है और कहा है कि आने वाले सभी विमानों का रास्ता बदला जा रहा है। हेस ने कहा कि मंगलवार को सभी

आपरेशन रोक दिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि एडवर्ड्स एयर फोर्स बेस पर नए और विकास के दौर से गुजर रहे एयरक्राफ्ट की टेस्ट फ्लाइट की जाती है। बी-52 स्ट्रेटोफोर्ट्रेस लंबी दूरी का बाम्बर है। 1950 के दशक से यह अमेरिकी सेना की हवाई ताकत का एक अहम हिस्सा है। यह एयरक्राफ्ट पारंपरिक और परमाणु, दोनों तरह के हथियार लंबी दूरी तक ले जाने में सक्षम है और वियतनाम से लेकर ईरान युद्ध तक के संघर्षों में इसका इस्तेमाल किया गया है।

# न्यू मैक्सिको की खदान में मिला मगरमच्छ का पूर्वज

**वाशिंगटन**  
साल 2006 में अमेरिका के न्यू मैक्सिको की एक खदान में मगरमच्छ का पूर्वज मिलने का दावा वैज्ञानिकों ने किया है। इस विचित्र जीव का नाम लैब्रुजास्युकस एक्सपेक्टेटस रखा गया है। वैज्ञानिकों ने ऐसे अद्भुत प्राचीन जीव की पहचान की है जो देखने में मगरमच्छ से बिलकुल अलग था। यह जीव लगभग 212 मिलियन साल पहले लेट ट्रायसिक काल में धरती पर मौजूद था और यह मगरमच्छ के परिवार का ही हिस्सा था, लेकिन इसकी शारीरिक बनावट और चलने का तरीका आज के खूंखार मगरमच्छों से बहुत भिन्न था। स्टोन ब्रुक यूनिवर्सिटी के पेलियोन्टोलॉजिस्ट एलन टर्नर, जो इस अध्ययन के प्रमुख लेखक हैं, ने इस जीव की स्थिति साफ करते हुए साइटोर्फिक अमेरिकन को बताया कि यह आधुनिक घड़ियाल और मगरमच्छों का सीधा पूर्वज नहीं था, बल्कि इसे मगरमच्छों का एक बहुत दूर का चचेरा भाई माना जा सकता है। यह विकास की एक अलग



शाखा थी जिसने शुवोसार नाम के जीवों को जन्म दिया, जो प्राचीन मगरमच्छ के रिश्तेदार थे। इनका

शरीर क्रोटेशियस काल के डायनासोरों से काफी मिलता-जुलता था; ये दो पैरों पर चलते थे, छहरे

थे और इनकी चोंच में दांत नहीं होते थे।  
एलन टर्नर के अनुसार, शुवोसार इस कनेक्ट-इवोल्यूशन (ऑभिस्सारी विकास) का एक शानदार उदाहरण है, जहाँ दो बिल्कुल अलग वंशजवाली वाले जीवों ने जीवित रहने के लिए एक जैसे तरीके अपनाए। मगरमच्छ के रिश्तेदारों के लिए दो पैरों पर चलना एक अनोखा रास्ता था, ठीक वैसे ही जैसे डायनासोर और बाद के पक्षियों ने भी यही रास्ता अपनाया था। यह तरीका स्पष्ट रूप से काफी सफल रहा, जिसके चलते ये जानवर लंबे समय तक धरती पर जिंदा रहे। इस नए जीव का नाम उत्तरी न्यू मैक्सिको के घोस्ट रेंच से पड़ा है, जो दशकों से जीवाश्मों का केंद्र रहा है। इस रेंच का पुराना स्पेनिय नाम रैंचोस डी लास बुजोस है, जिसका अर्थ चुड़ैलों का रेंच होता है। इसी से इस जीव के नाम का पहला हिस्सा लैब्रुजा (चुड़ैल) लिया गया है, और इसके साथ ग्रीक शब्द स्यूकस (मगरमच्छ) जोड़ा गया है।  
प्रजाति का नाम एक्सपेक्टेटस इसलिए रखा

गया क्योंकि पेलियोन्टोलॉजिस्ट्स को इस इलाके में पहले ही दो अन्य शुवोसार मिल चुके थे, एक पुराना और एक नया, और वे इनके बीच के समय के जीव की उम्मीद कर रहे थे। नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम आफ लास एंजिल्स काउंटी के नाथन मिम्थ ने बताया, ट्रायसिक काल के शुरुआती और बाद के शुवोसार मिलने से हमें पेलियोन्टोलॉजिस्ट्स को एक उम्मीद थी कि इनके बीच के समय का भी कोई जीव जरूर होगा। इस खोज में पेर और बांह की हड्डियां, रीढ़ के हिस्से और अन्य टुकड़े मिले हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार, लैब्रुजास्युकस पश्चिमी उत्तरी अमेरिका में कम से कम 10 मिलियन सालों तक ऐसा ही रहा। यह खोज उस समय के जानवरों के शरीर में होने वाले बदलावों को समझने में मदद करती है। लैब्रुजास्युकस अब दुनिया भर में चौथा और उत्तरी अमेरिका में तीसरा पहचाना गया शुवोसार है। इससे पहले टेक्सस और अर्जेंटीना में भी इसके नमूने मिल चुके हैं।